Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 4, Issue - 2, Feb- 2021
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.871
Received on : 03/02/2021 Accepted on : 18/02/2021 Publication Date: 25/02/2021

नेपाली संस्कृत अभिलेखों में भारतीय धर्म एवं देवी-देवता

डॉ. कन्हैया सिंह
पी.डी.एफ., प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर वि.वि. गोरखपुर
Email - ksingh.131@rediffmail.com

शोध सारांश: प्रकृति के खेल निराले हैं, कही पहाड़, कही नदी, कहीं खाई, कहीं समतल मैदान, कहीं उपजाऊ भूमि, कही बंजर, कहीं रेगिस्तान और कहीं अन्यत्र कुछेक विस्मताओं के बावजूद एक समानता भी दिखाई देती है कि वहां मानव विकास के लिए कुछ न कुछ प्राकृतिक सम्पदाएं निश्चित रूप से विद्यमान रही हैं। जिन्हें मानव ने अपने उत्थान के लिए उपयोग किया। ऐसी ही कुछ समानता एवं विषमता के बीच भारत-नेपाल की संस्कृतियां भी भौगोलिक रूप से एक परिवेश में उत्पन्न हुई। हिमालय की तलहटी में बसा हुआ नेपाल एवं भारत वर्ष आरम्भ से ही एक दूसरे के पूरक रहे हैं। न केवल मानचित्रात्मक अपितु भारतीय एवं नेपाली संस्कृति भी एक ही उद्गम स्थल से अद्भूत जान पड़ती है। भारत एवं नेपाल को स्थानीय भाषा में "रोटी एवं बेटी" रिश्ते वाला देश कहा गया है। आज भी नेपाल की अधिंकाश जनसंख्या रोजगार प्राप्ति के लिए भारत की ओर पलायन करते हैं। भारत एवं नेपाल में वैवाहिक सम्बंध भी प्राचीन काल से ही विद्यमान हैं। आज से लगभग **1500** वर्ष पूर्व नेपाल में अनेकों संस्कृति भाषा एवं ब्राम्ही लिपि में अभिलेख लिखवाये गये। जिनमें समस्त भारतीय देवी-देवताओं की उपासना, दान, उनकी लोकप्रियता आदि का विशद् वर्णन किया गया है। इन अभिलेखों में विष्णु, शिव, इन्द्र आदि अनेक महत्वपूर्ण देवी-देवताओं एवं उनके सम्मान में किये गये दान तथा मंदिर व मूर्ति के निर्माण हेतु किये गये राजाओं के योगदान का विस्तृत उल्लेख है।

बीज शब्द : नेपाल, भारत, विष्णु, शिव, इन्द्र, दान, अभिलेख, अष्टाध्यायी, काठमाण्डू, पशुपतिनाथ मंदिर, छंगुनारायण मंदिर, शुच्छाग्र स्तूप, जयेश्वर लिंग आदि ।

उद्देश्य:

प्रस्तुत शोध-पत्र में नेपाल शब्द की ब्युत्पत्ति से लेकर वर्तमान तक भारत-नेपाली धार्मिक विश्वास का संक्षिप्त विवरण किया गया है। चूंकि लेखक नेपाल की तराई क्षेत्र का मूल रूप से रहने वाला है जिसके कारण नेपाली संस्कृति, भाषा, धार्मिक स्थिति आदि के बारे में जिज्ञासु है। अतएव इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मैने यह शोध-पत्र प्रस्तुत करने का विनम्र प्रयास किया है। जो आगामी अध्येताओं के लिए शोध के महत्वपूर्ण आयाम प्रस्तुत करने में सहायक हो सकता है। साथ ही भारत एवं नेपाल के बीच उत्पन्न वैचारिक मतभेद को न्यून करने में समर्थ हो सकता है।

विस्तृत शोध-पत्र

एशिया महाद्वीप के दक्षिणी हिस्से को सामान्यतः दक्षिण एशिया कहा जाता है, जिसका तात्पर्य हिमालय पर्वत के दक्षिणवर्ती देशों की भौगोलिक स्थिति से है। इस क्षेत्र में भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, मालदीव, भूटान, श्रीलंका आदि देश आते हैं। उल्लेखनीय है कि दक्षिण एशियाई देशों ने मिलकर **8** दिसम्बर **1985** को **SAARC- SOUTH ASIAN ASSOCIATION OF REGIONAL COOPRATION** का गठन किया। जिसमें व्यापार, अर्थव्यवस्था, सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी एवं वैज्ञानिक विकास को बढ़ावा देने का उद्देश्य बनाया गया। इस संगठन में सात देश क्रमशः- भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, मालदीव, श्रीलंका, भूटान एवं नेपाल शामिल हैं। भारत के सहयोग से **3** अप्रैल **2007** को अफगानिस्तान को भी आठवें देश के रूप में शामिल किया गया। जिसका मुख्यालय नेपाल की राजधारी काठमाण्डू को बनाया गया। यद्यपि यह संगठन कई महत्वपूर्ण कड़ियों को जोड़ते हुए दिखायी देता है परन्तु दक्षिण एवं

दक्षिण पूर्व एशियाई देशों में प्राचीन काल से ही सांस्कृतिक सम्बंध स्थापित हो चुके थे। इन सभी राष्ट्रे में अधिकांश यथा- कम्बोडिया, श्रीलंका एवं नेपाल आदि देशों में भारतीय कला, स्थापत्य, संस्कृति, धर्म एवं देवी-देवताओं का उल्लेख विविध रूपों में मिलता है।

प्रकृति प्रदत्त भौगोलिक स्थिति जहां भारत एवं नेपाल को एक सूत्र में बाधें हुए परिलक्षित होती है, वहीं यहां की संस्कृति, धार्मिक भावना, भाषा एवं लिपि में भी एकात्मकता का भाव समाहित है। भारतीय उपमहाद्वीप के हिमालयी तलहटी में बसे हुए इस देश में मनुष्यों के आगमन का स्पष्ट प्रमाण **9000** ई.पू. में प्राप्त होता है।[1] उल्लेखनीय है कि नेपाल की राजधानी काठमाण्डू उपत्यकता से नवपाषाण कालीन उपकरण प्राप्त हुए है, जो भारतीय सभ्यताओं के समकालीन प्रतीत होते हैं।[2]

भारतीय धार्मिक एवं लौकिक ग्रन्थों यथा- अष्टाध्यायी, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, पतंजलि का महाभाष्य आदि[3] में नेपाल का उल्लेख होना निःसन्देह भारत एवं नेपाल की सत्त अन्तः सांस्कृतिक प्रवाह को अभिव्यक्त करता है। यद्यपि दोनों देशों के इतिहास एवं संस्कृति पर अनेक शोध कार्य हो रहे है, तथापि नेपाली संस्कृत अभिलेखों के आलोक में व्यापक धार्मिक एकात्मकता विषय पर अध्ययन की अद्यावधि आवश्यकता है।

एशिया के जिन देशों के साथ भारत के सहस्राब्दियों पूर्व घनिष्ठ सम्बन्ध रहे हैं उनमें नेपाल का नाम मुख्य है। नेपाल से भारत के प्रागैतिहासिक सम्बन्ध रहे हैं।[4] भारत व नेपाल के मध्य सांस्कृतिक आदान-प्रदान कर प्रारम्भ भारत में मगध साम्राज्य की स्थापना के साथ हो जाता है।[5] आर्थिक-राजनैतिक संघर्षों में सबल शत्रु से बचाव हेतु जो पक्ष नेपाल की उपत्यका में शरण लेता था वह अपने साथ भारतीय संस्कृति के तत्व ले जाता था, जो नेपाल के आर्यीकरण में सहायक हुआ।[6]

नेपाल में मुख्यतः चार राजवंशों- नेमुनि (गोपाल), अहीर, किरात और लिच्छवि ने प्राचीन नेपाल के इतिहास में शासन किया। इनमें से दो अहीर और लिच्छवि राजवंश के आधिपत्य में भारतीय क्षेत्र भी थे। एशिया के दूसरे देशों की भाँति नेपाल से भारत के सम्बन्धों की सजीव एवं सुदृढ़ परम्परा बौद्ध धर्म के प्रवेश के बाद बनी। भगवान बुद्ध अपने शिष्यों के साथ नेपाल गये थे।[7] नेपाल में सर्वप्रथम प्रवेश करने वाली जाति किरात मानी जाती है इनके राजा जितेदस्ती **(520** ई.पू.) के समय भगवान बुद्ध नेपाल गये थे; इनके उपदेशों को सुनकर किरात जाति बौद्ध हो गयी थी। काठमाण्डू से **20** मील पूर्व स्वयंभू पर्वत के पश्चिम 'नमुरा' नामक स्थान पर 'शुच्छाग्र' नामक स्तूप है जिसे बुद्ध की नेपाल यात्रा का स्मारक माना जाता है, यहाँ बुद्ध ने निवास किया था।[8]

उल्लेखनीय है कि नेपाली संस्कृति में भारतीय धर्म एवं देवी-देवताओं से सम्बंधित कई महत्वपूर्ण सूचनाएं विद्यमान हैं, जो प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक प्रवाहमान हैं। ऐसी ही कुछ धार्मिक परम्पराओं की सूचना प्राचीन नेपाली संस्कृत अभिलेखों से प्राप्त होती है। ज्ञातव्य है कि आर. ग्नोली महोद्य एक इटालियन विद्वान हैं, इन्होंने नेपाल से प्राप्त लगभग[9] **89** संस्कृत अभिलेखों को संग्रहित कर प्रकाशित किया। सभी अभिलेख गुप्तकालीन लिपि एवं संस्कृत भाष में उत्कीर्ण हैं, साथ ही इन्हें किसी न किसी प्रतिमा एवं लिंगादि पर उत्कीर्ण किया गया है। इन अभिलेखों में कतिपय संस्कृत के गूढ एवं महत्वपूर्ण छन्दों एवं अलंकारों का भी प्रयोग हुआ है, जैसा कि गुप्त शासकों के अभिलेखों में प्रयुक्त किया गया है। इन संस्कृत अभिलेखों के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इनमें से अधिकांश लेखों में शिव के लिंग स्वरूप का उल्लेख किया गया है। जिन देवी-देवताओं को अधिकांशतः इन अभिलेखों में उल्लखित किया गया है उनमें शिव, विष्णु, इन्द्र के साथ ही उमा एवं लक्ष्मी की प्रतिमा स्थापित करने का साक्ष्य प्राप्त होता है।

अभिलेखों में शिव तत्व की प्रधानता से स्पष्ट होता है कि इस कालखण्ड में शिव एक व्यापक देवता के रूप में प्रतिष्ठित हो चुके थे। नेपाल के लाजनपाट नाम स्थान से **466** ई. में स्थापित शिवलिंग प्राप्त हुआ है, जो ज्येष्ठ मास में चतुर्दशी को स्थापित किया गया था।[10] राजा मानदेव द्वारा **491** ई. में एक अन्य शिवलिंग स्थापित करने का अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त होता है।[11] यह अभिलेख वसन्ततिलका छन्द में उत्कीर्ण है, जिसमें मानदेव के संरक्षण में नरवर्मा नामक भृत्य ने बड़े भक्तिभाव से एक उपयुक्त सुन्दर मन्दिर का निर्माण किया।[12] नेपाल स्थित पशुपति नाथ मंदिर के चारो द्वारों पर विभिन्न काल खण्ड में बने हुए शिवलिंग स्थापित किये गये है। जो तत्कालीन समाज में शिव की प्रधानता के द्योतक है। संवत् **413** में राजा श्री मानदेव की चरण कृपा से भक्ति पूर्वक शुद्ध मति के द्वारा जयवर्मा ने इस विस्तृत नरलोक ;भूलोकद्ध में जयेश्वरनाम से विख्यात लिंग को राजा और जगत् के हित के लिये स्थापित किया। भगवान लिंग की कर्ण-पूजा के लिए और अपनी पुण्यप्राप्ति के लिए अक्षय नीवि भी प्रदान किया।[13] देवपाटन नामक स्थान पर उत्कीर्ण एक अन्य अभिलेख शिवलिंग की स्थापना का स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करता है। जिसे जगत हितार्थ स्थापित किये जाने का उल्लेख किया गया है। उल्लेखनीय है कि नेपाली अभिलेखों में शिव के कई स्वरूपों की अराधना करने का साक्ष्य उपलब्ध है। जिसमें शिव को नागेश्वर, नाथेश्वर,

प्रभुकेश्वर, पशुपतिनाथ जैसे कई नामों से सम्बोधित किया गया है। इसके अलावा नेपाली संस्कृत अभिलेखों में लेख लिखने के पूर्व वृषभ का अंकन किया गया है, जो शिव के वाहन के रूप में वर्णित है।

शैव धर्म की व्यापकता का अप्रतिम उदाहरण लगभग **400** ई. में स्थापित विश्व प्रसिद्ध "श्री पशुपतिनाथ'' मंदिर है जिसके बारे में कई कथाएं प्रचलित है। जिसके अनुसार- इस मंदिर का निर्माण सोमदेव वंश के पशुप्रेक्ष ने तीसरी शती ई.पू. में कराया था किन्तु उपलब्ध ऐतिहासिक सुचनाएं **13**वीं शदी की प्रतीत होती हैं। नेपाल महात्म्य एवं हिमवंत खंड पर आधारित स्थानीय किवदंति के अनुसार एक बार भगवान शिव अन्य देवताओं से रूष्ट होकर वाराणसी को छोड़कर बागमती नदी के किनारे स्थित मृगस्थली में चकोर पक्षी का रूप धारण कर विचरण करने लगे, देवताओं द्वारा बहुत खोजने पर वर्तमान पशुपतिनाथ मंदिर में चतुर्मुख लिंग रूप में प्रकट हुए। ऐसी ही कई अन्य रोचक एवं महत्वपूर्ण दन्त कथाएं प्रचलित है। कथाएं जो भी रही हों इतना तो स्पष्ट है कि शैव धर्म की व्यापकता नेपाली समाज में आरम्भ से ही विद्यमान थी।

ज्ञातव्य है कि तत्कालीन भारत में इस कालखण्ड में गुप्त शासकों का शासन था, जिन्होंन भागवत अथवा वैष्णव धर्म को बढावा दिया, परन्तु शैव धर्म कहीं न कहीं लोक प्रचलित एवं आदि धर्म होने के कारण सामान्य जन में सदैव प्रचलित रहा है, क्योंकि इस धर्म की उपासना पद्धति अत्यंत सरल थी, कोई भी व्यक्ति अपने घर पर ही मिट्टी का धूहा अथवा प्रस्तर रखकर चावल, बेलपत्र, भांग, धतूरा एवं दूर्वादि से विधि पूर्वक पूजन कर सकता था। भारत में इन्हे आशूतोष, भोलेनाथ, शम्भूनाथ जैसे लोक प्रचलित नामों से अभिहीत किया गया।

शिव के पश्चात् विष्णु की उपासना का साक्ष्य प्राप्त होता है। **467** ई. में स्थापित भगवान विष्णु की विक्रान्त स्वरूप की प्रतिमा पशुपतिनाथ मंदिर के समीप से प्राप्त हुई है। यह प्रतिमा राजा श्री मानदेव द्वारा बैशाख मास के शुक्ल पक्ष द्वितीया को स्थापित किया गया है।[14] देवताओं के इस क्रम में भगवान इन्द्र की उपासना एवं उनके दिवाकर स्वरूप की प्रतिमा स्थापित करने का स्पष्ट साक्ष्य नेपाल नरेश मानदेव द्वारा स्थापित बहाल नामक स्थल से प्राप्त लेख से प्राप्त होता है। देवियों में उमा[15], लक्ष्मी[16], आदि का उल्लेख प्राप्त है। इसके अलावा कई धार्मिक प्रतीक चिह्न जैसे-शंख एवं चक्र[17] के साथ ही बृषभ[18] आदि का अंकन इन अभिलेखों के साथ ही प्राप्त होते हैं। उल्लेखनीय है कि प्राचनी भारतीय मुद्राओं एवं अभिलेखों में भी कतिपय इसी कालखण्ड में अनेकशः देवी-देवताओं के साक्ष्य मिलने लगते हैं। जहां आहत एवं जनपदीय मुद्राओं पर शंख, चक्र, बृषभ आदि का अंकन मिलता है, वहीं शक-कुषाण मुद्राओं पर एकाधिक स्वरूप में शिव का मानवरूप में अंकन स्पष्ट रूप से प्राप्त होता है। जिसमें शिव को तृशीर्ष एवं चतुर्भुज रूप में प्रदर्शित किया गया है। इसी क्रम में घोषुण्डी अभिलेख, गरूड़ध्वज स्तम्भ लेखादि में देव प्रतिमा स्थापित करने का साक्ष्य उपलब्ध है।

नेपाल में न केवल देवी-देवताओं की प्रतिमा स्थापित करने का साक्ष्य मिलता है, अपितु पितृभक्ति प्रदर्शन हेतु नेपाल नरेश मानदेव ने अपने पिता के प्रति आदर एवं दैवीय शक्ति स्वीकार करते हुए उनकी प्रतिमा स्थापित कर उपासना किया।[19] भारत में भी पित्र भक्ति के अनुरूप मृत राजाओं की प्रतिमा की स्थापना उनके पुत्रों द्वारा किये जाने के अनेकों प्रमाण उपलब्ध हैं। रामायण के अनुसार अयोध्या नगर में, प्रवेश द्वार के समीप ही देवकुल की स्थापना एवं उसमें मृत राजाओं की प्रतिमा स्थापित करने का विवरण है। जिसमें कहा गया है कि राजा दसरथ की मृत्यु के समय भरत ननिहाल में थे, वापस आते समय उन्होने देवकुल में अन्य मृत राजाओं के साथ ही राजा दसरथ की प्रतिमा को देखा, जिसके बाद उन्हें ज्ञात हुआ कि उनका स्वर्गवास हो चुका है। इसके अलावा कुषाण कालीन शासकों में भी मृत शासकों की प्रतिमा स्थापित करने का प्रचलन था।

उक्त सभी धार्मिक मान्यताओं के आलोक में कहा जा सकता है कि तत्कालीन नेपाली एवं भारतीय संस्कृतियों में एकरूपता का जो भाव उभर कर सामने आया, वह आज वर्तमान परिवेश में भी दृष्टिगत है। भारत-नेपाल के धार्मिक सम्बन्धों में भी प्रगाढ़ता के साथ ही राजनयिक सम्बन्ध भी महत्वपूर्ण रहे हैं, जिसके प्रत्यक्ष प्रमाण, भारत का रामेश्वरम तथा नेपाल का पशुपतिनाथ मन्दिर हैं। जहाँ एक ओर रामेश्वरम् मन्दिर के गर्भगृह तक प्रवेश करने के अधिकारी तीन व्यक्तियों में नेपाल की प्रजा भी एक है, तो दूसरी ओर पशुपतिनाथ की गणना भारत के द्वादश ज्योतिर्लिंगों में होती है। साथ ही नेपाल के लोगों के लिए भारत का बद्रीनाथ और केदारनाथ तथा भारत के लोगों के लिए नेपाल के मन्दिर, स्तूप तथा विहार समान रूप से महत्वपूर्ण हैं। इस प्रकार भारत और नेपाल को एकता के सूत्र में बांधने में धर्म का भी योगदान रहा है।

भारत और नेपाल के पारस्परिक सम्बन्धों की परम्परा को अधिक विश्वास और वास्तविकता से बताने वाले साधन भाषा और साहित्य हैं। नेपाल में शुंग काल से लेकर लिच्छवियों एवं मल्लों के काल तक के सभी अभिलेख संस्कृत में जो भारत से नेपाल पहुँची यही स्थिति पालि भाषा की भी रही जो संस्कृत से पहले ही नेपाल में प्रचलन में थी। नेपाल में सम्प्रति

सुरक्षित पालि और संस्कृत ग्रन्थों के आधार पर इतिहास के लिए अनेक नवीन तथ्यों को जुटाया जा सकता है। उक्त श्रृंखला अनावरत प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक बनी हुई है।

उपरोक्त के अतिरिक्त अधीत काल में दोनों देशों की न्याय तथा प्रशासनिक व्यवस्थाओं में पर्याप्त साम्यता दृष्टिगत होती है। अर्थव्यवस्था जैसे- कृषि, पशुपालन, व्यवसाय, मुद्राप्रणाली, व्यापार इत्यादि में भी दोनों देशों में समानता दिखायी पड़ती है। नेपाल की सामाजिक स्थिति भी भारत के समान ही है, यहाँ वर्ण व जातियों में समाज विभाजन है। पारिवारिक स्थिति तथा रहन-सहन भी भारत से मिलता-जुलता था। भवन-निर्माण कला तथा मूर्तिकला में भी भारत और नेपाल में समानता दृष्टिगत होती है। भारत और नेपाल शदियों से ही एक दूसरे के पूरक के रूप में दृष्टिगत हैं।

सारांश:

सारांशतः कह सकते हैं कि भारत एवं नेपाल की न केवल धार्मिक भावना अपितु सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधयां कहीं न कही एक ही मूल से सृजित परिलक्षित होते हैं। दोनो ही देश एक दूसरे के लिए आजीविका एवं सुरक्षा के साधन उपलब्ध कराने में सदैव तत्पर रहे हैं। उल्लेखनीय है कि यही धार्मिक एवं सांस्कृतिक एकात्मकता की भावना के परिणाम स्वरूप ही जहां एक ओर भारत की रक्षा के लिए गोरखा रेजीमेंट अपनी वीरता एवं कुशलता के लिए प्रख्यात है, वहीं **24** अप्रैल **2015** के दिन नेपाल में आये भीषण भूकम्प की त्रासदी से निपटने हेतु भारत सरकार द्वारा पहुंचायी गयी त्वरित राहत सामग्री एवं आपता में आहत हुए लोगों को बचाने हेतु ''बचाव दल'' का निष्ठापूर्वक किया गया प्रयास, भारत एवं नेपाल की एकात्मकता को प्रस्तुत करने का एक अप्रतिम उदाहरण है।

सन्दर्भ:

1. श्रीवास्तव, काशी प्रसाद - ए कन्ट्री स्ट्डी आफ नेपाल- फेडरल रिसर्च डिविजन, कांग्रेस लाईब्रेरी **2005** पृ. **10**.
2. रेगमी, डी.आर.- एंशियंट एण्ड मेडुअल नेपाल, काठमाण्डु **1952** पृ. **2**.
3. श्रीवास्तव, काशी प्रसाद- नेपाल का इतिहास, नई दिल्ली **1986** पृ. **6**.
4. गैरोला, वाचस्पति, भारत के उत्तर-पूर्व सीमांत देश, लखनऊ हिन्दी समिति सूचना विभाग, उ.प्र. **1968** पृ. **148**.
5. गोयल, श्रीराम,- प्राचीन नेपाल का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास, वाराणसी पृ. **15**.
6. बाशम, ए.एल., गोयल, श्रीराम- प्राचीन नेपाल का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास की भूमिका, नई दिल्ली पृ. **25**.
7. स्वयंभू पुराण, स्कन्दपुराण, नेपाल महात्म्य
8. अग्रवाल, कृष्णदेव- इम्पारटेन्स आफ नेपाली संस्कृत इन्सक्रपशन्स, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान प्रकाशन, नई दिल्ली **2010** पृ. **54**
9. उपरोक्त पृ. **89**.
10. उपरोक्त पृ. **50**.
11. उपरोक्त पृ.**45**.
12. रेगमी, डी.आर.- इन्सक्रपशन्स आफ एंशियन्ट नेपाल, अभिनव प्रकाशन, नई दिल्ली, **1983** पृ. **5**.
13. अग्रवाल, कृष्णदेव- इम्पारटेन्स आफ नेपाली संस्कृत इन्सक्रपशन्स, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान प्रकाशन, नई दिल्ली **2010** पृ. **52**
14. उपरोक्त पृ. **89**.
15. उपरोक्त पृ. **98**.
16. उपरोक्त पृ. **53**.
17. उपरोक्त पृ. **85**.
18. उपरोक्त पृ. **380**.
19. उपरोक्त पृ. **54**.